International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

# कुमाउनी कविताओं में पलायन का चित्रण

**ममता शाह[1], डॉ राजेश प्रसाद[2]**

[1]शोध छात्रा, हिंदी, रा.महा वि.द्वाराहाट
[2]शोध निर्देशक, हिंदी, रा.महा वि.द्वाराहाट, अल्मोड़ा

**सार**

किसी भी समाज को जानना हो तो पहले यदि साहित्य का अध्ययन कर लिया जाए तो अनुचित नहीं होगा क्योंकि साहित्य ही समाज का एक ऐसा दस्तावेज होता है जो उसके विभिन्न पहलूओ को गहरी मार्मिकता के साथ उजागर ही नहीं करता बल्कि समाज को जागरूक करने का भी कार्य करता है।

कुमाऊनी कविताओं में पलायन की समस्याओं का कवियों ने बखूबी चित्रण किया है जिसमें उन्होंने पलायन से उत्पन्न खो रहे मानवीय मूल्यए क्षीण होते सांस्कृतिक धरोहरए सामाजिक असमानताए विरान गांवों में थका देने वाली उदासी तथा शहरी चकाचौंध का आकर्षण को अपनी कविताओं का केवल विषय ही नहीं बनाया बल्कि उक्त समस्याओं पर गहरी चिंता भी अभिव्यक्त की है। साथ ही गांव के घरों की दरारों में कहीं अपनी सांसों की जद्दोजहत में दफ्न हुई अतीत की स्मृतियोंए का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया हैं। कवियों द्वारा यहां से हो रहे स्थाई व अस्थाई पलायन को अहम चिंता का कारण बताया भले ही मनुष्य ने विभिन्न समस्याओं एवं कारणों से विवश होकर शहरों की ओर जाना शुरू किया जो की आवश्यकता अनुसार बेहतर जीवन की तलाश थी।लेकिन इसके विपरीत अपनी मातृभूमि को तिरष्कृत कर देना भी उचित नहीं था वर्तमान में मनुष्य को इस स्थिति के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता है। प्रस्तुत लेख में पलायन की समस्या को कवियों के दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया गया है।

**बीज शब्द–** दस्तावेजए उजागरए जागरूकए समस्याएजद्दोजहतए मातृभूमिए तिरस्कृतए पलायनए मानवीय मूल्यए चकाचौंध, धरोहर, असमानताए वीरानए दृष्टिकोणए दरारए

**कुमाऊनी कविताओं में पलायन के विभिन्न आयाम–** कुमाऊं की भूमि में रहकर लोगों ने शिक्षाए स्वास्थ्यए रोजगारए संसाधन आदि के लिए हमेशा से कठिन जद्दोजहद कर कठोर जीवन को व्यतीत किया। जैसे-जैसे समय परिवर्तित होता गया मनुष्य ने अपनी सोच को बदलकर स्वयं के विकास के लिए कदम उठाने शुरू किये।जिसमें उनका एक बेहतर जीवन के लिए शहरों की ओर पलायन करना था। पलायन की इस प्रवृत्ति को अपमाने में कुमाऊं भी अछूता नहीं रहा। कुमाऊं से पलायन के अनेक कारण उभर कर सामने आए हैं। जिनमें मुख्य कारणों में मूलभूत सुविधाओं– बेहतर शिक्षा की कमीए स्वास्थ्य व रोजगार की कमी को बखूबी आंका गया है। इन समस्याओं पर सरकार भी तब ध्यान देती है जब वह अपने विकराल रूप में होती हैं । जिसे प्रसिद्ध कुमाऊनी कवि **महेश चंद्र पुनेठा जी** ने अपनी रचना **अब पहुंची हो तुम** मैं बड़े ही मार्मिक ढंग से वर्णित करते हुए गांव की पीड़ा को उजागर कर लिखा है –

**अब पहुंची हो सड़क तुम गांव**
**जब पूरा गांव शहर जा चुका।[1]**

पलायन की पीड़ा को रेखांकित करते हुए पुनेठा जी ने स्पष्ट किया है कि किस प्रकार सुविधाओं के अभाव में लोगों ने

अपनी पैतृक भूमि को ऐसे आसानी से त्याग दिया जैसे कि मानो पुराने वस्त्र फेंककर नए वस्त्र धारण कर लिए हों भले ही उसमें कितनी असहजता ही क्यों ना महसूस हो रही हो । जहां उनकी कविता एक ओर विस्थापन की पीड़ा को सार्थक करती नजर आती है वहीं पहाड़ में रहने वाली स्त्रियों का संसाधनों के अभाव में किस प्रकार अपने स्वास्थ्य के बजाय कृषि को प्राथमिकता देकर अपनी सांसे गवा देना भी अनायास ही नहीं होता पर कटु शब्दों में लिखते हैं–

**वह आज अचानक नहीं मरी**
**हां आज अंतिम बार मरी**
**उसको जानने वाले कहते हैं**
**मरी क्या बेचारी तर गई।[2]**

एक जागरूक नागरिक के रूप में कवि की संवेदनशील दृष्टि पहाड़ों की मूलभूत आवश्यकताओं व प्राथमिकताओं पर भी अनायास ही पड़ जाती है जब वह यह देखते हैं कि पहाड़ में पेयजल की समस्या की अपेक्षा योजनाओं ने मंदिरों को अधिक महत्व दिया है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि समाज के विकास धारकों को समाज की आवश्यकताओं व समस्याओं से कोई लेना– देना नहीं होता बल्कि वह केवल अपनी प्रसिद्धि तथा स्वार्थ हेतु बिना जनहित जाने ऐसे कार्यों को करते हैं जिनका कोई विशेष औचित्य आमजन के लिए नहीं होता है। ऐसे ही विकास की ओर दौड़ रहे समाज के लिए व्यंग और शायद उसकी असफलता भी हो की ओर इशारा करते हुए कवि लिखते हैं कि–

**लोग प्रशंसा कर रहे हैं**
**उनकी धर्म परायणता की**
**सर पर पानी सारते हुए।[3]**

कई बार लोगों ने वास्तविक कारणों से इतर अनुकरण वाद की संस्कृति को अपनाते हुए अपनी मातृभूमि को सरलता से त्याग देने का निर्णय लिया। इनमें कुछ लोग तो ऐसे थे जिन्होंने केवल विशेष अवसरों पर ही अपनी भूमि को याद किया लेकिन कुछ तो ऐसे थे जिन्होंने कभी लौटकर उस भूमि की ओर नहीं देखा। ऐसे लोगों ने शहरी चकाचौध को देखकर अपने सुनहरे गांव की भूमि में कगारे के वृक्ष बुजुर्गों को लावारिसों की तरह अकेला छोड़ा है उनकी जिम्मेदारी या तो उनके लड़खड़ाते हाथों में या अनेक एनजीओ ने संभाली है। इसी के प्रतिरोध में **अनिल कार्की** अपनी कविता **'पलायन से पहले'** में लिखते हैं–

**बचे खुचे बुजुर्गों मर जाओ जल्दी**
**तुम्हारा भला करने**
**आ गए एनजीओ देव।[4]**

इसी क्रम में वे उन लोगों को अपनी मातृभूमि को त्याग कर शहरों को अपनाने वालों को धिक्कारते हुए कहते हैं कि तुम जिस मातृभूमि को निर्ममता के साथ छोड़कर जिन शहरों को अपना रहे हो वहीं शहर एक दिन तुम्हें अपनी ही जमीनों से बेदखल भी कर सकते हैं साथ ही कवि ने एक ओर यथार्थ को कटु शब्दों में अभिव्यक्त किया है तो दूसरी ओर लोगों की निर्ममता पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्हें भविष्य के प्रति चेतावनी देते हुए सचेत कर लिखते हैं–

**याद रखना रहवासियो**
**तुम उस वक्त स्वर्ग से**
**बेदखल कर दिए गए**
**लोगों में गिने जाओगे**
**तथाकथित सभ्य शहर**
**जो खींच रहा तुम्हें अपनी तरफ**
**वक्त मिलते ही वह तुम्हारी जमीनों पर कब्जा कर लेगा**

**तुम भगोड़ों में गिने जाओगे।**[5]

कुछ कवियों ने पलायन को लेकर कहा है कि अनेक विषमताओं और उत्पीड़न को झेलकर यहां से लोगों ने पलायन के माध्यम से अपनी आजादी की घोषणा की है जो कि उनके शारीरिक आजादी नहीं बल्कि मानसिक आजादी हैए आजादी है उन लिंगए वर्ग और जातिगत भेदभाव एवं उत्पीड़नों से जिन्हें झेलते झेलते हुए अब अधीर हो चुके थे। अपनी ही भूमि में तथा अपने ही समाज में रहकर उनका जीवन किसी कैदी की भांति हो चुका था जिसमें निम्न वर्ग को तो स्वेच्छा से कार्य करनेए सामाजिक कार्यों में प्रतिभा करनेए यहां तक की शिक्षा प्राप्त करने का भी अधिकार प्राप्त नहीं था। वस्तुत स्थितियां कुछ हद तक तो परिवर्तित हुई किंतु पूर्ण स्वतंत्रता जैसी कोई चीज उनके लिए नहीं थी। समानता के भीतर ही असमानता छुपी हुई थी। इन्हीं भेदभावो से संबंधित कवियों की एक अलग विचारधारा व्यक्त हुई है। **मोहन मुक्त** ने अपनी कविता **'हिमालय दलित है'** में जातिगत भेदभाव की मार झेल रहे दलित की व्यथा को व्यक्त करते हुए लिखा है–

**गांव अकेला दिखता है**
**उसके भीतर होते हैं दो**
**दोनों के बीच रहती सीमा**
**दुश्मन देश जैसी सीमा**
**क्या एक गांव के भीतर रहते हैं दो देश ?**[6]

मनुष्य ने अपनी पैतृक भूमि में रहकर अनेक प्रकार के भेदभावो का सामना किया जिस कारण उनका जीवन अधिक कठिन होता गया समाज में उनकी स्थिति अत्यधिक दयनीय होती गई वे अपनी पीड़ा को समाज के समक्ष सांझा भी नहीं कर सकते थे। पूरे देवभूमि में जातिगत भेदभाव तो किसी बेल की तरह फैला हुआ था जिसमें मनुष्य को प्रत्येक पग अनेक बाधाओ का सामना करना पड़ा स्वतंत्रता मानो उनके लिए केवल एक शब्द मात्र रह गया हो। इसी क्रम में कवि मोहन मुक्त अपनी कविताओं में एक ऐसे आश्रय की तलाश में है जहां न जातिगत घुटन हो और ना जीवन जीने के लिए कोई बाधा। कवि जातिए धर्म आधारित भेदभाव से इतर स्वतंत्र जीवन की कल्पना करते हैं। लेकिन क्या इस देवभूमि में संभव है ऐसी कोई जगह पर लिखते हुए कहते है–

**मेरी प्यारी बताओ**
**वह कौन सी जगह है इस धरती पर**
**जहां कुछ न हो**
**जात जैसा**
**कृत्रिम अनश्वर और स्थाई निरोध।**[7]

पहाड़ में रहकर जब मनुष्य संसाधनों की कमी को झेलता है अनेक समस्याओं का सामना करता है और अंत में थक हार कर वह पलायन की प्रवृत्ति को अपनाता है।एक ऐसा मनुष्य जो अपार खुशियों की आशा लता व संभावनाओं को लेकर शहर में प्रवेश तो करता है लेकिन कठिन जद्दोजहत के पश्चात सीमित संसाधनों में गुजारा करने पर विवश हो चुका हो। शहर की आबो हवा और विकास के बीच फंसकर रह गया हो। ऐसे मनुष्य का चित्रण करते हुए कवि **मंगलेश डबराल** ने अपनी कविता **'शहर फिर से'** में लिखा है–

**इतने समय से तुम क्या खोजते हो इस शहर में**
**जहां एक धुंधली युवावस्था में**
**तुम पत्थर की तरह लुढ़कते हुए आए थे**
**तुम्हें मिली एक खाली जगह एक रात और रात के लिए बिस्तर।**[8]

पहाड़ों की अत्यधिक दयनीय स्थिति के बावजूद भी भविष्य में यहां से प्रवासित हो चुके लोगों के लौटने की गहरी उम्मीद में कवि **नवीन चंद्र पाठक** अपनी कविता **"वह जरूर लौटेंगे एक दिन"** में इसका स्पष्ट चित्रण करते हुए बताते हैं कि किस

प्रकार महानगरीय सभ्यताओं की यातनाओं से थक हारने के बाद प्रवासित लोग अपने कुनबे के साथ अपनी पैतृक भूमि अपने गांव में एक दिन अवश्य लौटेंगे जहां उन्हें अपनी दरार पड़ चुकी जमीनेंए जर्जर मकान और उन दरार पड़े मकानो में टिमटिमाते मायूसी भरी आंखों से अपनों की तलाश करते बेहाल बुजुर्ग दिखाई देंगे । तब उनके पास ना पूर्व की भांति अपना घर मिलेगाए अपने खेत खलियान मिलेंगेए ना ही निर्ममता से छोड़े गए गांव में वह अपनापन ही उन्हें नजर आएगा। इसी स्थिति का चित्रण करते हुए कभी लिखते हैं कि.

**पहाड़ में रचे बसे रहने की**
**बुढ़ी हड्डियों में मशक्कत जारी है**
**क्योंकि वे जरूर लौटेंगे एक ।**
**महानगरीय सभ्यताओं की यातनाओं से**
**थक हारने के बाद .कुनबे के साथ**
**गांव की बंजर जमीन जर्जर मकान की तलाश में।**[9]

इसका अनुमान लगाना भी अत्यधिक कठिन है कि वास्तव में लोगों ने अपना गांव संसाधनों के अभाव में छोड़ा या अनुकरण वाद से अत्यधिक प्रभावित होकर क्योंकि आज संसाधनों की अधिकता होने के कारण भी गांव लगातार विरानी की ओर बढ़ते जा रहे हैं। लोगों का अपनी मातृभूमि को छोड़ने के कई कारण हो सकते हैं जिसमें कुछ सार्थक तो कुछ निरर्थक भी हैं। रोजगार तथा शैक्षिक अभिवृद्धि हेतु शहरों की ओर जाना एक प्रकार से सार्थक है तो वही देखा–देखी के कारण अपनी भूमि को स्थाई या अस्थाई रूप से त्याग देना निरर्थक है। जिसका उल्लेख करते हुए **गणेश पाठक जी** ने अपनी कुमाऊनी कविता **'पलायनैकि पीड़'** में लिखा है.

**अच्छ्यालो टैम पर गौ.गौन में गाड़ी पूंजी गे छ।**
**भले ही खेत छन बंजर नहर हर जाग़ि बणि गे छ।।**
**इनू में पेयजल–संचार साधन अन्य सुविधा छन।**
**तुमूं कें भूमिया देवा धत्यूनिं लौटि बे एजा।।**[10]

## निष्कर्ष दृ

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि यदि पहाड़ में रह गए लोग और प्रवासित हो चुके लोग पहाड़ की दुर्दशा को अब भी समझने का प्रयास नहीं करेंगे तो वह ना ही शहर का निवासी बन सकता है और ना ही उसके लिए अपनी मातृभूमि बची रह सकती है। मनुष्य चाहे तो बिगड़ी हुई स्थितियों को भी समय से संभाल कर उसे प्रयोजनीय बना सकता है। यदि पहाड़ का मनुष्य जागरुक होकर अवसरों की पहचान कर सके जैसे कृषि में आधुनिक तकनीकी संसाधनों का प्रयोग कर स्वरोजगार को बढ़ावा देकर आत्मनिर्भर बन सकता है। छोटेलघु उद्योगों तथा पर्यटन आदि में स्वयं के लिए रोजगार के बेहतर अवसरों को अपना कर स्वरोजगार को बढ़ावा दे सकता है।पहाड़ों की स्थितियों को सुधारने के लिए सरकार और आम जनता दोनों को मिलकर इसके विकास के प्रति ठोस कदम उठाने की आवश्यकता हैए आवश्यकता है रोजगार के अवसरों को जगाने कीए पूर्ण सुख सुविधाओं की गांव तक पहुंच बनाने की तथा मातृभूमि के प्रति प्रेम व इसके महत्व को प्रत्येक जन को समझाने की।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1ण पुनेठाए महेश चंद्रए 'अब पहुंची हो तुम'ए समय साक्ष्य
2ण ीजचेरूध्धंसिजतममण्बवउ
3ण ीजचेरूध्धंसिजतममण्बवउ
4ण कार्कीए अनिलए ष्पलायन से पहले'ए समय साक्ष्य प्रकाशन देहरादूनए पृष्ठ संख्या. 120

5ण कार्कीए अनिलए ष्पलायन से पहले' समय साक्ष्य प्रकाशन देहरादूनए पृष्ठ संख्या –130
6ण मुक्तए मोहनए 'हिमालय दलित है'ए संभावना प्रकाशन .2022
7ण ीजजचेरूध्ध्रंदबीवूण्बवउ
8ण डबरालए मंगलेशए 'शहर फिर सेए ीजजचेरूध्ध्णीपदकूपण्वतह
9ण पाठकए नवीन चंद्रए ख्वे जरूर लौटेंगे एक दिन'ए हिन्कुष अंकित प्रकाशन हल्द्वानी 2017 पृष्ठ संख्या.94
10ण पाठकए गणेशए ष्पलायनैकि पीड़'एहिन्कु' अंकित प्रकाशन हल्द्वानी 2017 पृष्ठ संख्या.194
11ण पलायन आयोग रिपोर्ट 2018